3 वे मुनिवर कब मिली हैं

वे मुनिवर कब मिलि, हैं उपगारी।
साधु दिगम्बर, नगन निरम्बर, संवर भूषण धारी।। टेक।।

कंचन कांच बराबर जिनके, ज्यों रिपु त्यों हितकारी।
महल मसान, मरण अरु जीवन, सम गरिमा अरु गारी।।१।।

सम्यग्ज्ञान प्रधान पवन बल, तप पावक परजारी।
शोधत जीव सुवर्ण सदा जे, काय–कारिमा टारी।।२।।

जोरि युगल कर 'भूधर' विनवे, तिन पद ढोक हमारी।
भाग उदय दर्शन जब पाऊँ, ता दिन की बलिहारी।।३।।

हे आत्मन! कब ऐसा सुयोग आयेगा जब उन उपकार स्वरूपी मुनिराज के दर्शन होंगे! वे मुनिवर जो निर्वस्त्र हैं, समस्त परिग्रह से रहित हैं, जो शुद्ध ध्यान में लीन, समस्त आस्रवों से विरत होकर संवर रूपी आभूषण को धारण किये हुये हैं।

जिनके समक्ष शत्रु–मित्र, स्वर्ण व कांच, महल व श्मशान, जीवन व मृत्यु तथा सम्मान व अपमान सभी परिस्थितियां बराबर हैं अर्थात् जो इनको एक समान मानकर समता भाव रखते हैं, ऐसे साधु के मिलने का सुयोग कब होगा।

वे साधु जो सम्यक्ज्ञान की प्रधानता के बल से तप की अग्नि में समस्त परभावों की आहुति देते हैं। देह की कालिमा से अपने को भिन्न जानकर सुवर्ण के समान अपने शुद्ध स्वभाव के शोधन में ही लीन रहते हैं, उनके दर्शनों का सुयोग कब प्राप्त होगा।

ऐसे मुनिराज को भूधरदासजी दोनों हाथ जोड़कर विनय पूर्वक नमस्कार करके कहते हैं कि भाग्य के उदय से जिस दिन ऐसे साधु के दर्शन का सौभाग्य मिले, उस दिन पर सब कुछ न्यौछावर है क्योंकि वह दिन ही वास्तव में जीवन का सर्वोत्कृष्ट दिन होगा।